टापू के बीच मोहोलात चौसठ पांखड़ी की

बन्यो तालके बीचमें, चारों तरफों जल।
बन झरोखे गिरदवाए, सोभित बाग मोहोल।। १ ।।

हौज कौसर ताल के बीच में एक सुन्दर टापू महल शोभायमान है जिसके चारों तरफ जल है, वन हैं तथा महलों में झरोखे हैं।

अब कहूं ताल के मोहोल की, जल गिरदवाए गेहेरा गंभीर।
लेहेरें लगें बीच गुरज के, जल खलकत उज्जल खीर।। २ ।।

टापू महल के चारों तरफ गहरा जल है। उस जल की लहरें आकर गुर्जों से टकराती हैं और उज्ज्वल जल दूध के समान दिखाई देता है।

ज्यों एक फूल चौसठ पांखड़ी, चार द्वार बने गिरदवाए।
गुरज साठ बने तिन पर, ए खूबी कही न जाए।। ३ ।।

जिस तरह से एक फूल की चौसठ पंखुड़ियां हैं उसी तरह से इसकी शोभा है। घेरकर चारों तरफ चार द्वार आए हैं। घेरकर साठ गुर्ज आए हैं। इनकी शोभा कहने में नहीं आती।

एक टापू बन्यो बीच जलके, मोहोल गुरज तिन पर।
द्योहरियां ताल किनार पर, फिरती पाल बराबर।। ४ ।।

जल के बीच जो टापू बना है उसके महल, गुर्ज, द्योहरियां तालाब के किनारे पर पाल पर बराबर आई हैं।

ए चौक बने चारों तरफों, और पाल ऊपर चार घाट।
चारों द्वार टापूअके, बने सनमुख ठाट।। ५ ।।

टापू के चारों दिशा में चार चौक और चार घाट पाल पर शोभा देते हैं। यह चारों घाट तालाब के सामने चारों दिशाओं में आमने-सामने हैं।

द्योहरियां घाटन पर, चारों जुदी जिनस।
देख देख के देखिए, जानों एक पे और सरस।। ६ ।।

घाटों के ऊपर सुन्दर द्योहरियां अलग-अलग तरह की शोभा देती हैं। उनको देखो तो एक से दूसरी और अच्छी दिखाई पड़ती है।

पाल टापू हीरे एक की, तिनमें कई मोहोलात।
अनेक रंग नंग देखत, असल हीरा एक जात।। ७ ।।

पूरी पाल और टापू एक हीरे का बना है। इसमें कई महल बने हैं। उस एक हीरे की पाल में अनेक नगों के रंग झलकते हैं।

जब खूबी ताल यों देखिए, चढ़ चांदनी पर।
फिरती पाल बन द्योहरी, जल सोभित अति सुन्दर।। ८ ।।

जब तालाब की खूबी चांदनी पर चढ़कर देखते हैं तो चारों तरफ घेरकर आई (एक सौ अट्ठाईस) द्योहरियों की शोभा जल में झलकती है।

Nijanand App

तले सोभा चारों द्वारने, आगूं कठेड़े बैठक।
आराम लेवें इन ठौरों, जब आवें इत हादी हक।। ९ ।।

चारों द्वारों की शोभा अधिक है। आगे कठेड़ा लगा है। इस ठिकाने में आकर श्री राजजी, श्री श्यामाजी और सखियां कभी-कभी बैठते हैं।

बीच-बीच में बन बिराजत, गुरज छज्जे जल पर।
छे छज्जे फिरते बने, सब गुरजों यों कर।। १० ।।

दो गुर्जों के बीच की जगह में वन शोभा देते हैं और गुर्ज के तीन छज्जे जल पर और छः वनों पर आते हैं।

तीन छातें चौथी चांदनी, सब गुरजों पर इत।
तले छज्जे जल हाथ लग, ऊपर अति सोभित।। ११ ।।

इस टापू महल की गुर्जों सहित तीन भोम चौथी चांदनी है। गुर्जों के छज्जे के नीचे हाथ लगता जल है और ऊपर बड़ी शोभा है।

ए टापू जिमी जवेरकी, बीच बीच बन्या बन।
दोनों तरफों छज्जे बने, ऊपर बन रोसन।। १२ ।।

पूरे टापू की जमीन जवेर (जवाहरात) जैसी झलकती है। गुर्जों के बीच-बीच वन आया है। उन वृक्षों के दोनों तरफ छज्जे आए हैं और ऊपर से वन की सुन्दरता है।

तीनों तरफों गुरज के, छज्जे बने यों आए।
उपरा ऊपर भी तीन हैं, क्यों कहूं सोभा ताए।। १३ ।।

गुर्जों के तीनों तरफ छज्जे आए हैं और ऊपरा-ऊपर भी तीनों भोमों में तीन-तीन हैं। इसकी शोभा कैसे बताएं?

तीन तीन छज्जे तरफ जलके, छे छज्जे बन पर।
अन्दर गिरदवाए मोहोलात, बीच बैठक चबूतर।। १४ ।।

तीन-तीन छज्जे जल के ऊपर और छः छज्जे वन के ऊपर गुर्जों के अन्दर घेरकर चारों दिशाओं में साठ महल आए हैं। चार द्वार आए हैं। इसके ठीक मध्य में कमर भर ऊंचा चबूतरा बना है।

दो गुरजों बीच मंदिर, हर मन्दिर झरोखे।
तीन तीन उपरा ऊपर, बने तीनों भोमों के।। १५ ।।

दो गुर्जों के बीच में मन्दिर बने हैं। हर मन्दिर में ऊपरा-ऊपर तीनों भोमों में तीन झरोखे आए हैं।

गुरज गुरज तीन द्वारने, तीनों भोमों में।
कई एक ठौरों चरनियां, ऊपर चढ़िए जिनों से।। १६ ।।

एक-एक गुर्ज की तीन दिशाओं में तीन दरवाजे हैं। इस तरह उसकी भी तीन भोम शोभा देती हैं। कई ठिकानों पर सीढ़ियां बनी हैं जिससे ऊपर चढ़ते हैं।

Nijanand App

सामी और हार बनी, मन्दिर सामी मन्दिर।
तिनमें साठ बाहेर, और साठ भए अंदर।। १७ ।।

इन साठ मन्दिरों के सामने एक थंभों की हार छोड़कर दूसरे साठ मन्दिरों की एक हार और आई है। इस तरह से साठ बाहर और साठ अन्दर हैं।

बीच चेहेबच्चा जल का, कई फुहारे छूटत।
फिरते द्वार इन चौक के, बोहोत सोभा अतन्त।। १८ ।।

चबूतरे के मध्य भाग में एक चहबच्चा जल का आया है जिसमें कई फव्वारे लगे हैं। इस चौक के चारों तरफ के द्वार अति सुन्दर हैं।

तीनों भोम चबूतरे, और फिरते मन्दिर द्वार।
बीच बैठक चबूतरे, बने थंभ तरफ हार।। १९ ।।

तीनों भोम में चबूतरा है और चारों तरफ मन्दिरों के द्वार आए हैं। बीच में चबूतरे पर बैठक है और एक हार साठ थंभों की आई है।

कही फिरती हार थंभन की, द्वार द्वार आगूं दोए।
हर मन्दिर दो द्वारने, सोभा लेत अति सोए।। २० ।।

हर द्वार के आगे दो-दो थंभों की हार आई हैं। हर एक मन्दिर में दो-दो द्वार हैं। यह अधिक शोभा देते हैं।

साठ गुरज फिरते कहे, गिरद चांदनी दिवाल।
सो ए कमर के ऊपर, खूबी लेत कांगरी लाल।। २१ ।।

साठ गुर्ज घेरकर आए हैं जो चांदनी पर जाकर खुले हैं। कमर भर ऊंची दीवार पर लाल रंग की कांगरी गुर्जों पर आई है।

ऊपर चांदनी कठेड़ा, बीच जोड़ सिंघासन।
राज स्यामाजी बीच में, फिरती बैठक रूहन।। २२ ।।

चांदनी पर कठेड़ा लगा है। बीच के चबूतरे पर सिंहासन है। वहां श्री राजजी और श्री श्यामाजी बीच में बैठते हैं। रूहें घेर कर बैठती हैं।

कबूं मिलावा नजीक, मिल बैठें गिरदवाए।
छोटा तखत दुलीचे पर, बैठीं रूहें अंगसों अंग लगाए।। २३ ।।

रूहें कभी-कभी नजदीक चबूतरे पर बैठती हैं और कभी-कभी एक-एक गुर्ज में दो-दो सौ बैठती हैं। तख्त के ऊपर दुलीचा बिछा है। सखियां वहां जुड़कर बैठती हैं।

कबूं कबूं बैठियां कुरसियों, रूहें बारे हजार।
कबूं दो दो एक कुरसी पर, कबूं हर कुरसी चार चार।। २४ ।।

कभी-कभी सखियां सोफे, कुर्सियों पर बैठती हैं और कभी बारह हजार सखियां दो-दो एक सोफे पर बैठती हैं और कभी एक-एक सोफे पर चार-चार बैठती हैं।

Nijanand App

कबूं दो दो सै एक कुरसियों, बैठें साठों गुरजों गिरदवाए।
सो कुरसी दिवालों लगती, यों बैठक कठेड़े भराए।। २५ ।।

कभी दो सौ सखियां साठों गुर्जों में घेरकर कुर्सियों पर बैठती हैं। यह कुर्सियां दीवारों के साथ लगी हैं। इस तरह से कठेड़ा तक भरकर बैठने की शोभा है।

बीच तखत बिराजत, सबथें ऊंचा गज भर।
बैठक हक बड़ीरूह, सोभा लेत सब पर।। २६ ।।

बीच में श्री राजश्यामाजी तख्त पर कमर भर ऊंचे चबूतरे पर विराजते हैं जहां पर श्री राजश्यामाजी शोभायमान हैं।

हक बड़ीरूह बैठें तखत पर, फिरती रूहें बैठत।
दो दो सै बीच गुरज के, बारे हजार रूहें इत।। २७ ।।

श्री राजश्यामाजी तख्त पर विराजमान होते हैं और चारों तरफ सखियां बैठती हैं। हर एक गुर्ज में दो-दो सौ के हिसाब से साठ गुर्जों में बारह हजार बैठती हैं।

चांद चौदमी रात का, बैठें चांदनी नूरजमाल।
सनमुख सबे बैठाए के, करें खावंद रूहें खुसाल।। २८ ।।

चौदस (चतुदर्शी) की रात की चांदनी में टापू महल की चांदनी पर श्री राजश्यामाजी के सामने सखियां बैठती हैं और इस प्रकार श्री राजश्यामाजी सखियों को आनन्दित करते हैं।

अमृत खसम रूहन पर, नूर नजरों सींचत।
सो रस रूहें रब का, सनमुख रोसन पीवत।। २९ ।।

श्री राजजी महाराज अपनी नजरे-करम से रूहों को अमृत रस पिलाते हैं। यह सखियां श्री राजजी के इस रस को सामने बैठकर नजरों से पीती हैं।

पूरन पांचों इन्द्री सरूपें, एक एकमें पांच पूरन।
हर एकमें बल पांच का, हर एक में पांच गुन।। ३० ।।

हर एक स्वरूप में पांचों इन्द्रियों को पूर्ण सुख मिलता है। यहां की हर एक इन्द्रिय में पांचों इन्द्रियों के गुण हैं।

एक एक जाहेर सब में, एक एक में चार बातन।
इन बिध रूहें मुतलक, असल अर्स के तन।। ३१ ।।

एक इन्द्रिय जाहिर है पर उसमें चारों बाकी इन्द्रियों के गुण छिपे हैं। इस प्रकार रूहों के अर्श के तन शोभित हैं।

अर्स तन रूहें आतमा, तरफ सबों बराबर।
पूरन कहावें याही बातसें, सब विधों ए कादर।। ३२ ।।

सखियों की परआतम और आतम सब एक समान हैं और इसी वास्ते वह पूर्ण और समर्थ कहलाती हैं।

Nijanand App

सरूप बैठे सब मिल के, घेर के गिरदवाए।
सबों सुख पूरन हक का, रूहें लेवें दिल चाहे।। ३३ ।।

सब सखियां श्री राजश्यामाजी को घेरकर चारों तरफ बैठी हैं। सबको श्री राजजी महाराज का दिल चाहा पूर्ण सुख मिलता है।

अब और देऊं एक नमूना, इनको न पोहोंचे सोए।
पर कहे बिना रूहन के, दिल रोसन क्यों होए।। ३४ ।।

अब एक और नमूने से समझाती हूं, क्योंकि कहे बिना रूहों को समझ कैसे आएगी?

एक जरा इन जिमी का, ताको नूर न माए आकास।
तिन जिमी के जवेर को, होसी कौन प्रकास।। ३५ ।।

इस जमीन के एक कण का भी नूर आकाश में समाता नहीं है, तो इस जमीन के जवेर (जवाहरात) का प्रकाश कैसा होगा? यह विचार करने की बात है।

सो जवेर आगूं रूहन के, कैसा देखावें नूर।
ज्यों सितारे रोसनी, बल क्या करे आगूं सूर।। ३६ ।।

एक जवेर (जवाहरात) रूहों के आगे वैसा तेज दिखलाता है जैसे सूर्य के आगे सितारे।

आगूं रूह सूरत सूर के, जवेर गए ढंपाए।
तो सोभा हक जात की, क्यों कर कही जाए।। ३७ ।।

एक सखी के सूर्य के समान तेज के सामने कई जवेर (नगीने) ढक जाते हैं तो श्यामा महारानी की शोभा का वर्णन कैसे हो?

जो रूहें अंग अर्स के, तिन चीज न कोई सोभाए।
वाहेदत में बिना वाहेदत, और कछू ना समाए।। ३८ ।।

जो सखियों की परआतम के अंग हैं उनके समान कोई शोभा नहीं है। परमधाम में एक दिली है। दूसरा कुछ नहीं है।

वस्तर भूखन हक जातके, सो हक जातै का नूर।
कोई चीज अर्स अंग को, कर ना सके जहूर।। ३९ ।।

इन स्वरूपों के वस्त्र और आभूषण भी उनके ही समान तेज झलकाने वाले हैं। परमधाम की किसी भी चीज की उपमा यहां से नहीं दी जा सकती है।

सोभा अंग अर्स के, या वस्तर या भूखन।
होवे दिल चाह्या कई विधका, सोभा सिनगार माहें खिन।। ४० ।।

परमधाम के तनों की शोभा या वस्त्रों और आभूषणों की शोभा दिल में इच्छा के अनुसार कई तरह के सिनगार में एक पल में बदल जाती है।

सो हेम नंग अति उत्तम, इन रूहों के माफक।
वस्तर भूखन साजके, जाए देखें नजर भर हक।। ४१ ।।

वहां के सोना और नग (नगीने) रूहों के माफिक ही तेज डालते हैं। रूहें सब वस्त्रों और आभूषणों से सजकर तैयार हो जाती हैं। तब उन्हें श्री राजजी महाराज नजर भर देखते हैं।

Nijanand App

ए सोभा सब साज के, रूहें ले बैठी अपना नूर।
सो आगूं हक बड़ीरूह नूर के, ए क्यों कर करूं मजकूर।। ४२ ।।

सब सिनगार सजाकर यह सखियां अपनी शोभा के साथ बैठी हैं और आगे श्री राजजी श्री श्यामाजी सुन्दर शोभायमान हैं। उनकी हकीकत कैसे वर्णन करूं?

तखत रूहों बीच चांदनी, बैठे बड़ी रूह खावंद।
सो थंभ हुआ चांदनी, ऊपर आया पूरन चन्द।। ४३ ।।

चांदनी के मध्य सिंहासन पर रूहों के बीच श्री राजश्यामाजी बैठे हैं। इन सबके मुखारबिन्द की शोभा के तेज की तंरग चन्द्रमा की चांदनी से टकराकर एक थंभ के समान लगती है।

जेती फिरती चांदनी, भर्‌यो नूर उद्दोत।
ले सामी चन्द रोसनी, भयो थंभ एक जोत।। ४४ ।।

जितनी घेरकर चांदनी आई है उतनी घेर में तेज ही तेज दिखाई देता है। रूहों और श्री राजश्यामाजी के मुखारबिन्द के तेज से सामने चन्द्रमा की रोशनी तक एक थंभ जैसे दिखाई देती है।

इन नूर थंभकी रोसनी, पड़ी ताल पर जाए।
जल थंभ कियो आसमान लों, घेर्‌यो चंद गिरदवाए।। ४५ ।।

इस नूरी थंभ की रोशनी जब ताल पर पड़ती है, तो वह तेज का थंभ जल में दिखाई देता है और आसमान तक ऐसा प्रकाश करता है मानो उसने चन्द्रमा को घेर लिया हो।

जंग करे जोत थंभ की, अर्स जोतसों आए।
मिली जोत जिमी बन की, ए नूर आसमान क्यों समाए।। ४६ ।।

इस थंभे का तेज और परमधाम का तेज आपस में टकराता है। उन्हीं में जमीन का तेज और वन का तेज आसमान में जाकर समा जाता है।

महामत कहे ए मोमिनों, जो होवे अरवा अर्स।
सो प्रेम प्याले ल्यो भर भर, पीजे हकसों अरस-परस।। ४७ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! तुम तो परमधाम के हो। प्रेम की मस्ती के प्यारे श्री राजजी महाराज की नजर से नजर मिलाकर मस्ती से पिओ।

॥ प्रकरण ॥ ९ ॥ चौपाई ॥ ६१६ ॥

फूलबाग

और पीछल पाल तलाव के, कई बन सोभा लेत।
ए बन आगूं फिरवल्या, परे धामलों देखाई देत।। १ ।।

तालाब की पाल के पीछे पच्छिम की तरफ बड़ा वन के कई वन शोभा देते हैं। यह बड़ा वन तालाब को घेरता हुआ रंग महल तक दिखाई देता है।

ताल को बीच लेय के, मिल्या धाम दिवालों आए।
कई मेवे केते कहुं, अगनित गिने न जाएं।। २ ।।

यह बड़ा वन तालाब को घेरकर धाम की पच्छिम की दीवार तक आता है। इन वनों में कई तरह के मेवा के वृक्ष हैं जो गिनती में नहीं आते।

Nijanand App